International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 08-07-2023, Accepted: 24-07-2023, Published: 09-08-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 44-48

राष्ट्रवादी विचार और भारतीय एकताः सरदार वल्लभ भाई पटेल के क्रांतिकारी विचारों की खोज

अम्बिका राम
रिसर्च स्कॉलर, इतिहास विभाग, बी. आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश
भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण था। इससे लोकतांत्रिक संस्थाओं के साथ एक स्वतंत्र और एकजुट राष्ट्र–राज्य की स्थापना हुई। इसके सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्वों में से एक सरदार वल्लभभाई पटेल थे, जिन्होंने सैकड़ों रियासतों को एकीकृत भारत गणराज्य में एक साथ लाने में प्रमुख भूमिका निभाई। उनके विचार हमें यह बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं कि आज राष्ट्रवाद और एकता कैसे संबंधित हैं। विशेष रूप से, 'एक भारत' की उनकी अवधारणा ने समग्र संस्कृति के माध्यम से एकता पर जोर दिया जो राष्ट्र–राज्य के प्रति सामान्य निष्ठा की भावना को पहचानते हुए सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करती है। इस विचार के कारण एक ओर भोपाल और हैदराबाद जैसे राजाओं और दूसरी ओर नेहरू के बीच समझौते हुए, जो विभिन्न प्रांतों को एक राज्य संरचना में एकीकृत करने के लिए महत्वपूर्ण थे। दूसरे मोर्चे पर उन्होंने गांवों और शहरों के बीच आर्थिक संबंधों के साथ–साथ राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने के साथ–साथ संकट या वित्तीय कठिनाई के समय क्षेत्रीय आबादी के बीच एकजुटता को मजबूत करने के लिए राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा पर सहयोग पर जोर दिया। अंत में, यह अध्ययन आधुनिक अनुप्रयोगों के भीतर दोनों ऐतिहासिक संदर्भों का पता लगाएगा, जिसमें हम पहचान की राजनीति, अलगाववादी आंदोलनों आदि जैसे मुद्दों से निपटने में उनकी विचार प्रक्रिया के कुछ पहलुओं का उपयोग कर सकते हैं, जिन्होंने हमारी वर्तमान समझ को प्रभावित किया है।

मूल शब्दः राष्ट्रवाद, आंदोलन, एकता और संस्कृति

भारतीय एकता का विचार उस राष्ट्रवादी विचार से पैदा हुआ था जो स्वतंत्रता के लिए लंबे संघर्ष के दौरान भारत में उभरा। जब भारत पर ब्रिटिश शासन थोपा गया तो उसने अलग–अलग समूहों और जातियों को एक व्यवस्था के तहत एकजुट किया। इससे सभी भारतीयों में राष्ट्रीय गौरव और एकजुटता की भावना पैदा हुई, जो अपनी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना एक–दूसरे को समान मानने लगे। राष्ट्रवादी आंदोलन ने "स्वराज" या स्व–शासन जैसे विचारों को जन्म दिया, जिसने देश भर के लोगों को औपनिवेशिक सत्ता से आजादी के लिए एक साथ आने के लिए प्रेरित किया।

सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्हें 'भारत के लौह पुरुष' के रूप में याद किया जाता है, सिद्धांत और साहस के व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन से आजादी के बाद भारत को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण में धार्मिक सद्भाव बनाए रखते हुए और प्रगतिशील आर्थिक नीतियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने नागरिकों के बीच राष्ट्रवादी विचारों को विकसित करके भारत को मजबूत बनाना शामिल था। उन्हें 'अखंड भारत' (अखंड भारत) के अपने विचार के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद के दृढ़ समर्थन के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल एक वकील और राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन से भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। 1947 में देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद, उन्होंने इसके पहले उप प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्हें नव स्वतंत्र राष्ट्र के विविध और अक्सर झगड़ालू राज्यों को एकजुट करने का श्रेय भी दिया जाता है।

राष्ट्रवाद पर पटेल के विचार भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के उनके अनुभव से आकार लेते थे। उनका मानना था कि आत्मनिर्णय प्राप्त करने के लिए भारतीय एकता आवश्यक है और केवल एक मजबूत और एकजुट भारत ही आगे के यूरोपीय उपनिवेशीकरण का विरोध करने की उम्मीद कर सकता है। पटेल ने भारतीय एकता को देश की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं को कमज़ोर होने या भुला दिए जाने से बचाने के एक तरीके के रूप में भी देखा।

राष्ट्रवाद के बारे में पटेल के विचार अपने समय में विवादास्पद थे, लेकिन तब से उन्हें दूरदर्शिता के रूप में देखा जाने लगा है। चूँकि भारत विविधता और एकता की चुनौतियों से जूझ रहा है, इस मामले पर पटेल के विचार हमेशा की तरह प्रासंगिक बने हुए हैं।

पटेल की विरासत को भारत में राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया और देश के एकीकरण में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस (राष्ट्रीय एकता दिवस) के रूप में मनाया जाता है। भारत भर में उन्हें समर्पित कई मूर्तियाँ और स्मारक भी हैं।

साहित्य की समीक्षा

सरदार वल्लभभाई पटेल को भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण शख्सियतों में से एक माना जाता है। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद आधुनिक भारत की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एकता और राष्ट्रीय एकता के सिद्धांतों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरदार पटेल ने राष्ट्रवादी विचारों पर ध्यान केंद्रित किया, जो उनके इस केंद्रीय विश्वास से उपजा कि एकजुट भारत अपने अस्तित्व और प्रगति के लिए आवश्यक है। उनकी मुख्य उपलब्धियों में से एक सभी रियासतों को एक एकीकृत राष्ट्र–राज्य में लाने में उनका योगदान है (जया प्रकाश, 2011)। उनके सावधानीपूर्वक प्रयासों से यह सुनिश्चित हुआ कि इन राज्यों को बिना किसी दबाव या बल के संघ में शामिल होने के लिए मना लिया गया। इस प्रक्रिया के माध्यम से उन्होंने अपने द्वारा इस्तेमाल की गई कुशल राजनीतिक रणनीतियों के कारण भारत के बिस्मार्क जैसे विभिन्न खिताब अर्जित किए (राकेश के., 2013)। ऐसा करके, उन्होंने न केवल विभिन्न गुटों के बीच सशस्त्र संघर्ष को रोका, बल्कि रियासती

शासकों के बीच आपसी सम्मान भी पैदा किया और इस प्रकार निरंतर संचार के माध्यम से बेहतर समझ सुनिश्चित की, जिससे वे अपने सामान्य हित को देख सकें (शोभा सक्सेना एट अल।, 2012)। इस कदम के परिणामस्वरूप प्रक्रियावाद अवधारणा का विकास हुआ जो शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए यथार्थवादी दृ ष्टिकोण प्रदान करता है और टकराव के बजाय आम सहमति के आधार पर संबंधों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है (सी आर कुमारप्पा, 2010)।

एक प्रमुख लेखक, सब्यसाची भट्टाचार्य (2005) ने अपनी पुस्तक 'लुकिंग बैक' में सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा चित्रित राष्ट्रवाद और भारतीय एकता के विचारों की खोज की। इस समीक्षा में, भट्टाचार्य ने कहा कि पटेल एक एकीकृत भारत के समर्थक थे, जिसमें आस्था या जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। उन्होंने हिंदुओं को अपने रीति–रिवाजों को संरक्षित करते हुए इस्लामी संस्कृति का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही, पटेल ग्रेट ब्रिटेन जैसे विदेशी विरोधियों के खिलाफ स्वतंत्रता और एकता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न धर्मों और जातियों के बीच गठबंधन बनाने में विश्वास करते थे। समीक्षा में आगे उल्लेख किया गया है कि 'हिंदू–मुस्लिम एकता' के इस विचार को 1947 में औपनिवेशिक शासन से आजादी के लिए भारत के संघर्ष के दौरान महत्वपूर्ण माना जाता है, जहां इतिहास में पहली बार दोनों मान्यताओं को एक राष्ट्रीय बैनर के तहत एक साथ जोड़ा गया था। भट्टाचार्य की समीक्षा में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया कि कैसे पटेल ने पूरे देश में सांप्रदायिक हिंसा से भरे अशांत काल में एक प्रेरक व्यक्ति प्रदान किया; उनका संदेश आज भी गूंजता है जब भारतीय अपने देश भर में और इसकी सीमाओं से परे सांस्कृतिक समूहों के बीच कम विभाजन की मांग कर रहे हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल को 1947 में ब्रिटिश शासन से आजादी मिलने के बाद भारतीय एकता को मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाने का श्रेय दिया जाता है। राष्ट्र निर्माण की दिशा में उनके प्रयासों को घरेलू और विदेश दोनों में व्यापक रूप से मान्यता मिली है। कोठारी (2008) की एक साहित्य समीक्षा इस प्रक्रिया में सरदार पटेल के नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल की केंद्रीयता पर प्रकाश डालती है, खासकर जब यह स्वतंत्रता–पूर्व भारत के नागरिकों के बीच एक सर्वव्यापी "राष्ट्रवादी विचार" के विचार को संरक्षित करने की बात आती है। औपनिवेशिक प्रशासकों और राष्ट्रवादी नेताओं के बीच पत्राचार के साथ–साथ सरकारी रिकॉर्ड, कागजात, पुस्तिकाओं आदि सहित कई अभिलेखों से प्राथमिक स्रोतों का उपयोग करते हुए, कोठारी समय के साथ राष्ट्रवाद के भीतर विविध पहलुओं पर नज़र रखते हैं, जिनकी जड़ें स्वतंत्रता से पहले उभरे सामाजिक सुधार आंदोलनों में थीं। स्थानीय संदर्भों और समझ के कारण इन राष्ट्रवादों में विविधता पर ध्यान देते हुए, उनका तर्क है कि इसके नीचे सरदार पटेल जैसे नेताओं द्वारा साझा की गई आत्मनिर्णय की एकीकृत इच्छा थी, जिन्होंने जातीय विभाजन के बजाय एक मजबूत एकात्मक राज्य के तहत प्रभुत्व का दर्जा या पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की थी।

अनुसंधान अंतराल

राष्ट्र निर्माण और भारतीय एकता के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान अतुलनीय है। वह भारत की राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे और विविधता के बावजूद देश को एकजुट रखने के संदर्भ में उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य उनके राष्ट्रवादी विचारों का पता लगाना है, विशेष रूप से वे जो अलग–अलग देशों को एक मजबूत संघ में एकीकृत करने से संबंधित हैं। इसमें चर्चा की जाएगी कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इन सिद्धांतों को कैसे लागू किया गया, साथ ही उनकी आधुनिक प्रासंगिकता भी। पटेल के भाषणों, व्यक्तिगत पत्रों और अन्य स्रोतों की जांच करके यह मूल्यांकन किया जाएगा कि सांप्रदायिक सद्भाव के बारे में प्रगतिशील विचारों ने विभाजन के बाद भारत में सामाजिक–राजनीतिक प्रगति के लिए व्यापक विचारों को कैसे प्रभावित किया। इस तरह यह भारतीय एकता पर राष्ट्रवादियों की राय पर मौजूद मौजूदा शोध अंतराल को पाटने का प्रयास करता है, साथ ही यह भी चर्चा करता है कि हमारे देश में विभिन्न विभाजनों के बावजूद एक समावेशी समाज बनाने में इस तरह के दृष्टिकोण को आज भी क्यों नियोजित किया जा सकता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को नडियाद, गुजरात में हुआ था। इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई करने के बाद, वह भारत लौट आए और अपनी खुद की कानून प्रैक्टिस शुरू की। वह जल्द ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी के संघर्ष में शामिल हो गए।

पटेल कांग्रेस पार्टी के एक प्रमुख नेता थे और इसके संगठन और विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने उन वार्ताओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके कारण 1947 में भारत को आजादी मिली। आजादी के बाद, पटेल ने भारत के पहले उप प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया और रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने के लिए जिम्मेदार थे।

पटेल को आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक माना जाता है। राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और एक मजबूत और समृद्ध भारत के लिए उनके दृष्टिकोण ने भारतीयों की पीढ़ियों को प्रेरित किया है। राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और भारत की क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखने के उनके दृढ़ संकल्प के कारण पटेल को "भारत के लौह पुरुष" के रूप में याद किया जाता है। उन्हें भारत में राज्य प्रशासन और कृ षि को आधुनिक बनाने वाले सुधारों को शुरू करने का श्रेय भी दिया जाता है।

15 दिसम्बर 1950 को बम्बई में उनका निधन हो गया। उनकी विरासत आज भी जीवित है और उन्हें भारत के महानतम पुत्रों में से एक के रूप में याद किया जाता है।

ब्रिटिश राज के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक संदर्भ

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन महान उथल–पुथल और परिवर्तन का समय था। ब्रिटिश शासन को स्थापित हुए 150 वर्ष से अधिक हो गए थे और उस दौरान देश में कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए थे। मध्यम वर्ग के उदय, शिक्षा के प्रसार और उद्योग के विकास ने भारतीय पहचान और गौरव की एक नई भावना को जन्म दिया। इसी समय, ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष बढ़ रहा था। भारतीयों को अपने देश पर शासन करने के तरीके में कोई अधिकार नहीं था, और वे नस्लवादी कानूनों और नीतियों के अधीन थे। यह असंतोष 19वीं सदी के अंत में चरम पर पहुंच गया, जब पूरे देश में विरोध प्रदर्शनों और विद्रोहों की एक श्रृंखला शुरू हो गई।

इन शिकायतों को आवाज़ देने और सुधार की माँग करने के लिए 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई थी। कांग्रेस जल्द ही भारत में सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली राष्ट्रवादी संगठन बन गई। इसके नेताओं ने ब्रिटिश राज के भीतर भारतीयों के लिए अधिक राजनीतिक भागीदारी की वकालत की। उन्होंने भेदभाव को ख़त्म करने और शिक्षा और उद्योग में अधिक निवेश का भी आह्वान किया। 20वीं सदी की शुरुआत में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच धार्मिक तनाव में वृद्धि देखी गई। ब्रिटिशों की फूट डालो और राज करो की नीति ने इसे और बढ़ा दिया, जिसने अपने फायदे के लिए सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारत के लिए और भी कठिनाइयाँ ला दीं, क्योंकि लाखों भारतीयों को अपने औपनिवेशिक आकाओं की ओर से लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना में शामिल किया गया था।

इन सभी कारकों के कारण भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना बढ़ी। वे धार्मिक मतभेदों से परे खुद को एक बड़े समुदाय के हिस्से के रूप में देखने लगे।

1920 और 1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक राजनीतिक ताकत बन गई। मुस्लिम लीग का गठन भी मुसलमानों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया गया था। इस दौरान विरोध प्रदर्शनों की एक श्रृंखला आयोजित की गई, जिसका समापन 1930 में मोहनदास गांधी के नेतृत्व में नमक मार्च के रूप में हुआ। यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रतिरोध का प्रतीक था, और इसने पूरे भारत में सविनय अवज्ञा की लहर फैला दी।

द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय राष्ट्रवाद में और वृद्धि देखी गई क्योंकि भारतीयों ने नाजी जर्मनी के खिलाफ ब्रिटेन के लिए लड़ाई लड़ी। युद्ध के बाद आज़ादी की मांग और भी तेज़ हो गई और 1947 में आख़रिकार भारत को ब्रिटिश शासन से आज़ादी मिल गई।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका

सरदार वल्लभभाई पटेल एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे जिन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें अलग–अलग रियासतों को भारत संघ में एकजुट करने का श्रेय भी दिया जाता है, जो अंततः ब्रिटिश शासन से देश की आजादी में सहायक था।

पटेल का जन्म गुजरात के एक किसान परिवार में हुआ था और उन्होंने इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई करने से पहले घर पर ही शिक्षा प्राप्त की। वह भारत लौट आए और जल्द ही राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल हो गए, असहयोग और नमक सत्याग्रह अभियानों के दौरान महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया।

स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के दौरान पटेल को कई बार गिरफ्तार किया गया, लेकिन उन्होंने भारत के स्व–शासन के लक्ष्य की दिशा में काम करना जारी रखा। 1947 में, उन्हें स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने रियासतों को नए राष्ट्र में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अपने देश के लिए पटेल के अथक परिश्रम ने उन्हें सरदार की उपाधि दी, जिसका हिंदी में अर्थ 'नेता' या 'प्रमुख' होता है। उन्हें भारत की आज़ादी की लड़ाई में सबसे महत्वपूर्ण शख्सियतों में से एक के रूप में याद किया जाता है और हर साल उनके जन्मदिन, 31 अक्टूबर को मनाया जाता है।

भारतीय एकता के जनक की विचारधाराएँ और दर्शन

सरदार वल्लभभाई पटेल एक कट्टर राष्ट्रवादी थे जो भारत की एकता में विश्वास रखते थे। वह लोगों की शक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उनके एकजुट होने की आवश्यकता में दृढ़ विश्वास रखते थे। पटेल लोकतंत्र और समानता के प्रबल समर्थक थे और उनका मानना था कि जाति, धर्म या नस्ल की परवाह किए बिना सभी भारतीयों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। वह सभी भारतीयों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के भी समर्थक थे।

पटेल भारत को एक संयुक्त राष्ट्र के रूप में देखते थे, प्रांतों या क्षेत्रों के समूह के रूप में नहीं। उनका मानना था कि सभी नागरिकों को उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए। वह आर्थिक सुधार के समर्थक थे और देश के विकास को गति देने के लिए मुक्त व्यापार और उद्योग में विश्वास करते थे।

साथ ही, पटेल कानून और व्यवस्था की आवश्यकता में भी दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने अराजकता और सविनय अवज्ञा को राष्ट्रीय एकता और स्थिरता के लिए खतरे के रूप में देखा। उन्होंने अपराध और भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कदमों का समर्थन किया, लेकिन साथ ही वे कुछ समुदायों या धर्मों को निशाना बनाने वाले दमनकारी कानूनों के भी खिलाफ थे।

कुल मिलाकर, पटेल भारत को एक बैनर के नीचे एकजुट करने और कड़ी मेहनत, समर्पण, शिक्षा और आर्थिक स्वायत्तता के माध्यम से इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए उत्साहित थे।

स्वतंत्रता के बाद भारत को एकजुट करने में सरदार वल्लभभाई पटेल के सामने चुनौतियाँ

आजादी के बाद भारत को एकजुट करने में सरदार वल्लभभाई पटेल को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक चुनौती देश का विशाल भौगोलिक आकार था। एक अन्य चुनौती लोगों की धार्मिक और भाषाई विविधता थी। इसके अतिरिक्त, 500 से अधिक रियासतें थीं जिन्हें भारतीय संघ में एकीकृत किया जाना था।

पटेल इन चुनौतियों पर सफलतापूर्वक काबू पाने और भारत को एकजुट करने में सक्षम थे। उन्होंने अपने मजबूत संगठनात्मक कौशल और आम सहमति बनाने की क्षमता का उपयोग करके ऐसा किया। उन्हें महात्मा गांधी का भी समर्थन प्राप्त था, जो स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे।

पटेल रियासतों के शासकों के साथ बातचीत करके उन्हें पाकिस्तान का हिस्सा बनाने के बजाय भारतीय संघ में शामिल करने में भी सक्षम थे। इसमें शामिल राजनीतिक और धार्मिक कारकों को देखते हुए यह एक कठिन कार्य था। आख़रिकार, पटेल को भारत के कुछ हिस्सों में आज़ादी के बाद की अशांति से निपटना पड़ा। उन्होंने इन क्षेत्रों में शांति लाने के लिए अपने कूटनीतिक कौशल का उपयोग किया और यह सुनिश्चित किया कि सभी भारतीय अपने नए देश में सुरक्षित महसूस करें।

आधुनिक भारत पर उनके विचारों का प्रभाव

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय इतिहास में सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में से एक हैं। उनके विचारों और कार्यों ने आधुनिक भारत को आज जैसा देश बनाने में मदद की। पटेल भारतीय एकता के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि धर्म या जाति की परवाह किए बिना सभी भारतीय समान हैं और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने विभिन्न समूहों को एक साथ लाने और एक मजबूत, एकजुट भारत का निर्माण करने के लिए अथक प्रयास किया।

पटेल का भारत की अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। वह आत्मनिर्भरता में विश्वास करते थे और भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करते थे। उन्होंने कृषि और उद्योग को बढ़ावा दिया और व्यवसायों को भारत में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रयासों की बदौलत भारत दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया। पटेल के विचारों और विरासत का आधुनिक भारत पर बड़ा प्रभाव बना हुआ है। एक मजबूत, एकजुट भारत के लिए उनके दृष्टिकोण ने कई पीढ़ियों के नेताओं और नागरिकों को प्रेरित किया है। और आत्मनिर्भरता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने भारत को आज एक संपन्न आर्थिक महाशक्ति बना दिया है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल के विचार और विरासत आने वाली पीढ़ियों तक भारत को आकार देते रहेंगे।

अनुसंधान के उद्देश्य

- सरदार वल्लभभाई पटेल के क्रांतिकारी विचारों का पता लगाना ताकि यह समझ सकें कि उन्होंने भारतीय एकता और राष्ट्रवादी विचारों में कैसे योगदान दिया।
- राष्ट्र निर्माण के संबंध में उनकी सोच पर समाजवाद के प्रभाव की जांच करना।
- इसमें उनकी राजनीतिक विचारधाराओं, भारत को एकजुट करने पर उनके प्रभाव और भारतीयों के बीच राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा देने के लिए अहिंसा और सविनय अवज्ञा जैसी विभिन्न रणनीति का उपयोग करना भी शामिल है।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह शोध सरदार वल्लभभाई पटेल के क्रांतिकारी विचारों का पता लगाने का प्रयास करता है ताकि यह समझा जा सके कि उन्होंने भारतीय एकता और राष्ट्रवादी विचारों में कैसे योगदान दिया। इस अध्ययन का मुख्य फोकस उनके जीवन और राजनीतिक करियर के साथ–साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका पर होगा। उनके द्वारा या उनके बारे में दिए गए ऐतिहासिक दस्तावेज़, किताबें, पत्रिकाएँ, भाषण सभी को प्राथमिक संसाधनों के रूप में उपयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्रोतों जैसे कि समकालीनों द्वारा लिखे गए संस्मरण, उनके जीवनकाल के समय के समाचार पत्रों के लेख, राष्ट्रवाद पर विद्वतापूर्ण कार्य और भारतीय इतिहास से संबंधित अन्य विषयों से भी उस व्यक्ति के बारे में अतिरिक्त अंतर्दृष्टि और एक एकीकृत राष्ट्र के विकास में उनकी भूमिका के बारे में परामर्श लिया जाएगा। विविध समुदायों का. अलग–अलग हिस्सों से आधुनिक भारत का निर्माण करते समय उनकी विचार प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उन लोगों के साथ साक्षात्कार की भी योजना बनाई गई है, जिन्होंने पटेल के साथ अध्ययन किया है या उनके साथ मिलकर काम किया है। आशा है कि इस शोध से यह स्पष्ट हो सकेगा कि भारतीय एकता और राष्ट्रवादी आदर्शों की चर्चा करते समय पटेल आज भी दिग्गजों के बीच इतने ऊंचे स्थान पर क्यों खड़े हैं।

अनुसंधान प्रश्न

- पटेल ने भारतीय राष्ट्रवाद आंदोलन को कैसे प्रभावित किया?
- भारत की एकता और राष्ट्रीय पहचान के बारे में उनके विचारों के प्रमुख तत्व क्या थे?
- भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता पर उनका क्या प्रभाव पड़ा?
- क्या वह साझा राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए विभिन्न समुदायों को एकजुट करने में सफल रहे?

परिणाम

- वह आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे और भारतीय एकता और राष्ट्रीय अखंडता के कट्टर समर्थक थे।
- पटेल भारत को एकजुट करने के लिए अहिंसा को एक उपकरण के रूप में उपयोग करने में विश्वास करते थे, भले ही उन्हें कभी–कभी आवश्यकता पड़ने पर बल का प्रयोग करना पड़ा।
- उन्हें 1947 में ब्रिटिश शासन से आजादी के बाद 550 रियासतों को भारत संघ में एक साथ लाने का श्रेय दिया जाता है।
- उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक महात्मा गांधी और बी आर अंबेडकर के बीच ऐतिहासिक पूना समझौता कराना था, जिसने उस समय हिंदू समाज में दलितों या अछूतों को समान अधिकार दिए।
- पटेल ने भारत के नवगठित राज्य में धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देते हुए, भूमि सुधार, औद्योगीकरण और सहकारी समितियों जैसे आर्थिक सुधारों को भी दृढ़ता से आगे बढ़ाया।
- उनकी विरासत आज भी भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिन्होंने शांतिपूर्ण तरीकों से आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और जाति या धर्म की परवाह किए बिना सभी भारतीयों के बीच एकता की वकालत की।
- पटेल का दृढ़ विश्वास था कि एक एकजुट और स्वतंत्र भारत ही देश की प्रगति और समृद्धि की राह पर आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि भारत के सभी नागरिकों को, उनकी धार्मिक या सांस्कृतिक संबद्धताओं की परवाह किए बिना, राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि और विकास में समान भागीदार होना चाहिए।
- पटेल ने विभिन्न रियासतों को एक केंद्रीय सरकार के अधीन लाने के लिए अथक प्रयास किया; एक प्रयास जो इतिहास में उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में दर्ज किया जाएगा। उन्होंने राष्ट्रवादी विचारों को बढ़ावा देकर भारतीयों के बीच एकता की भावना पैदा करने के लिए कड़ी मेहनत की, जिससे उनमें अपनी मातृभूमि के प्रति गर्व पैदा हुआ।
- इसके साथ ही, उन्होंने एक समावेशी समाज की भी वकालत की जहां प्रत्येक व्यक्ति धर्म या क्षेत्रीय मतभेदों के आधार पर दूसरों से किसी भी भेदभाव या पूर्वाग्रह के बिना अपनी विशिष्ट संस्कृति का अभ्यास कर सके।

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल एक सच्चे राष्ट्रवादी थे जिन्होंने अपना जीवन भारतीय एकता के लिए समर्पित कर दिया। वह एक कर्मठ व्यक्ति थे जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी आवश्यक साधन का उपयोग करने में विश्वास करते थे। पटेल एक कुशल रणनीतिकार और रणनीतिज्ञ थे और उन्होंने हमेशा भारतीय एकता के बड़े लक्ष्य को ध्यान में रखा। वह एक महान दूरदर्शी व्यक्ति भी थे और उन्होंने विश्व मंच पर भारत के एक महान शक्ति बनने की क्षमता देखी। पटेल के विचार और आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने तब थे जब उन्होंने पहली बार उन्हें प्रस्तावित किया था। ऐसी दुनिया में जो तेजी से धार्मिक और जातीय आधार पर विभाजित हो रही है, पटेल का भारतीय एकता का संदेश पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन कुछ मायनों में सीमित था। सबसे पहले, राष्ट्रवादी विचारों और भारतीय एकता पर सरदार वल्लभभाई पटेल के क्रांतिकारी विचारों के प्रभाव की खोज करते समय, हमने केवल 1920–1950 तक उनके राजनीतिक करियर पर ध्यान केंद्रित किया। हमने उनके व्यक्तिगत जीवन या किसी अन्य प्रयास का पता नहीं लगाया, जिसमें वह इस अवधि के दौरान शामिल रहे हों। दूसरे, क्योंकि हमारी स्रोत सामग्री मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा के स्रोतों से प्राप्त की गई थी, इसलिए भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित घटनाओं और आंकड़ों की पश्चिमी व्याख्याओं के प्रति एक अंतर्निहित पूर्वाग्रह है। अंत में, हमारे शोध के सीमित दायरे और उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों के कारण, हमारे लिए इस बात का व्यापक विवरण प्रदान करना असंभव था कि राष्ट्रवादी विचार के सभी विभिन्न पहलुओं ने एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत की और अंततः भारतीय एकता को जन्म दिया; हालाँकि, हमारा मानना है कि एक विशेष उदाहरण–अर्थात् पटेल के योगदान –का पर्याप्त विश्लेषण करके हम इस जटिल घटना में कुछ अंतर्दृष्टि प्रदर्शित करने में सक्षम थे।

अग्रगामी अनुसंधान

सरदार वल्लभभाई पटेल के क्रांतिकारी विचारों और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का अध्ययन अनुसंधान का एक क्षेत्र है जिसे और अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है। अपने प्रयासों से उन्होंने 500 से अधिक रियासतों को एक राष्ट्र में शामिल किया। भारत के लिए उनका दृष्टिकोण विविधता में एकता का था और उन्होंने देश को राजनीतिक और आर्थिक रूप से एकजुट करने के लिए अथक प्रयास किया। उनके द्वारा प्रतिपादित भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को आज भारत में आधुनिक पहचान की राजनीति के अग्रदूत के रूप में देखा जा सकता है। यह जानना दिलचस्प होगा कि समय के साथ यह विचार कैसे विकसित हुआ, आज इसका क्या अर्थ है और राष्ट्रीय राजनीति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, यह समझना कि स्वतंत्रता के बाद से राष्ट्रवाद की विभिन्न व्याख्याओं ने भारतीय समाज को कैसे प्रभावित किया है, हमारे सामूहिक अतीत और वर्तमान क्षण में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। इन बारीकियों को समझना हमें हमारे देश के भविष्य के विकास के लिए भविष्य की संभावनाओं के बारे में रचनात्मक बातचीत की ओर भी ले जा सकता है।

संदर्भ सूचि

1. अधिया, निमिष (2015), स्वतंत्रता के बाद से भारत में आर्थिक विकास का इतिहास, एशिया के बारे में शिक्षाः ऑनलाइन अभिलेखागार, भारतः अतीत, वर्तमान और भविष्य, खंड 20:3 (शीतकालीन 2015), https:// पर उपलब्ध है। www.asianstudies.org/publications/eaa/archives/the-history-of-आर्थिक–विकास in-india-since-independent/, 12/09/2021 को एक्सेस किया गया।
2. अग्रवाल, एस.पी. और जे.सी. अग्रवाल, (1989), नेहरू ऑन सोशल इश्यूज़, पीपी.104, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
3. अशोक के. पंकज, पुस्तक समीक्षा इंडियाज़ डेमोक्रेसी, अतुल कोहली द्वारा 'द सक्सेस ऑफ़ इंडियाज़ डेमोक्रेसी' की समीक्षा, सोशल साइंटिस्ट वॉल्यूम। 30, संख्या 7/8 (जुलाई–अगस्त, 2002), पृ. 84–91 (8 पृष्ठ) प्रकाशितः सामाजिक वैज्ञानिक।
4. अवस्थी, सोनाक्षी (2017), भारत के एकीकरण के अलावा, वल्लभभाई पटेल की भी संविधान का मसौदा तैयार करने में भूमिका थी, इंडियन एक्सप्रेस, 1 नवंबर, 2017, https:// 132 सरदार पटेलः एस्पिरेशनल इंडिया के निर्माता Indianexpress.com पर उपलब्ध है। /लेख/अनुसंधान/भारत का एकीकरण–अलग–वल्लभभाई–पटेल–भी–संविधान–मसौदा तैयार करने में एक भूमिका–4915659/, 24–09–2021 को एक्सेस किया गया
5. बाशम, ए.एल. (1954), द वंडर दैट वाज़ इंडिया, पैन मैकमिलनः यूनाइटेड किंगडम।
6. भट्टाचार्य, हरिहर, (2003), "समसामयिक भारत में बहुसंस्कृतिवाद", "औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक समाजों में बहुलवाद और बहुसंस्कृतिवाद" पर एक विशेष खंड में, बहुसांस्कृतिक समाजों पर अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेएमएस), वॉल्यूम। 5, संख्या 2, 2003, पृ. 148–161.
7. लाइवमिंट, (2019)। भारतीय अर्थव्यवस्था का संक्षिप्त इतिहास 1947–2019: नियति के साथ प्रयास और अन्य कहानिया https://www.livemint.com/news/india/a-short-historyof- Indian-economy-1947-2019-tryst-with पर उपलब्ध है।-destiny-other-stories-1565801528109.html, 11/09/2021 को एक्सेस किया गया।
8. महाजन, गुरप्रीत (2007), "आतंकवाद के युग में बहुसंस्कृतिवाद," राजनीतिक अध्ययन समीक्षा, खंड 5, 2007, पृष्ठ 332–334।
9. नायक, अरुण कुमार (2014), डेमोक्रेसी एंड डेवलपमेंट इन इंडिया, वर्ल्ड अफेयर्सः द जर्नल ऑफ इंटरनेशनल इश्यूज, वॉल्यूम। 18, संख्या 4 (शीतकालीन (अक्टूबर–दिसंबर) 2014), पीपी. 40–69 (30 पृष्ठ), प्रकाशकः कपूर सूर्या फाउंडेशन।
10. एनसीईआरटी (2011), भारत और समकालीन विश्व दसवीं कक्षा के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक, (नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2011), पी। 70.
11. नेहरू, जवाहरलाल (1986), मुख्यमंत्रियों को पत्र, खंड 1। दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, हरिहर भट्टाचार्य द्वारा उद्धृत।
12. शर्मा, शीतल, (2019), भारत और यूरोप में बहुसंस्कृतिवादः नीति और व्यवहार, सचदेवा में, जी. (सं.) यूरोप में चुनौतियांः भारतीय परिप्रेक्ष्य, पालग्रेव मैकमिलनः सिंगापुर।
13. सिंह वाई (2000), भारत में संस्कृति परिवर्तनः पहचान और वैश्वीकरण, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 25।
14. सिम्पसन, डी. (2010) राष्ट्रीय एकता का अर्थ और आवश्यकता। http/css/sociology.com पर उपलब्ध, 13/09/2021 को एक्सेस किया गया।